Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक **अन्सारुल्लाह** क़ादियान

मजिलस अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

जुलाई/2024 ई

MONTHLY QADIAN

# ANSARULLAH

July/2024

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

Date of Publication:10-07-2024

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz, Mob: 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beig, Mob: 9915223313

Annual Subscription: Rs: 250/- | Per Issue: Rs: 25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

5.6.2024 World Environment Day अवसर पर मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला शिमोगा (कर्नाटक) कि तरफ़ से पौदे लगाने से पहले एक दृश्य।

5.6.2024 World Environment Day अवसर पर मज्लिस अंसारुल्लाह करुलाई (ज़िला मलप्पुरम केरला) कि तरफ़ से पौदे लगाते हुए।

5.6.2024 World Environment Day अवसर पर मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला यादगीर (कर्नाटक) कि तरफ़ से पौदे लगाने से पहले दुआ करते हुए।

5.6.2024 World Environment Day अवसर पर मज्लिस अंसारुल्लाह सिकंदराबाद (तेलंगाना) कि तरफ़ से पौदे लगाने के बाद एक दृश्य।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ    نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ    وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ
سورۃ الصّف آیت ۱۵

**मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता**

**मासिक पत्रिका**

# अन्सारुल्लाह

**क़ादियान**


**Volume - 22** | **जुलाई 2024** | **Issue -05**



**निगरान**
अताउल मुजीब लोन

**सम्पादक**
सय्यद रसूल नियाज़

**उप-सम्पादक (हिन्दी)**
डॉक्टर अब्दुल माजिद
09915279005

**मैनेजर**
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313



**प्रेस**
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

**प्रकाशन स्थान**
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186



| विषय सुचि | पृष्ठ |
|---|---|
| दर्सुल क़ुर्आन | 2 |
| दर्सुल हदीस | 2 |
| हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश | 3 |
| **सम्पादकीय -** "दरसुल कुरआन" जमाअत-ए-अहमदिया की पहचान | 4 |
| **निवेदन सदर-ए-मज्लिस अंसारुल्लाह भारत** "मियां मिट्ठू न बनो-हर उम्र में क़ुरआन-ए-करीम पढ़ो" | 6 |
| **लेख : भाषण हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला** "अहमदिया मुस्लिम रिसर्च एसोसिएशन (AMRA) के पहले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर" **(शेष भाग)** | 8 |



Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

# दर्सुल क़ुर्आन

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُم مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى ٱلصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ
لِّلْمُؤْمِنِينَ ○

**अनुवादः** हे लोग! निस्संदेह तुम्हारे निकट तुम्हारे रब्ब की ओर से उपदेश की बात और सीनों में जो (रोग) है उसका उपचार तथा मोमिनों के लिए हिदायत और करुणा भी आ चुकी है। (युनूस-58)

# दर्सुल हदीस

**अनुवादः** हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अंहों वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लाल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कुरआन करीम पढ़ने वाले मोमिन का उदाहरण एक नारंगी की तरह है कि जिसका स्वाद भी अच्छा होता है और इस में सुगंध भी अच्छी होती है और उस मोमिन का उदाहरण जो कुरान करीम नहीं पढ़ता वह खजूर के समान है कि इस का स्वाद तो अच्छा है लेकिन उस की सुगंध नहीं होती। और उस फाजिर का उदाहरण जो कुरआन करीम पढ़ने का आदी है गुल रेहान की तरह है, जिसकी सुगंध अच्छी है, लेकिन इसका स्वाद कड़वा है, और उस फाजिर का उदाहरण जो कुरान नहीं पढ़ता उसका उदाहरण हंज़ल के समान है जिस में सुगंध भी नहीं होती और उस का स्वाद भी कड़वा होता है।

★ ★ ★

# हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

## नि:सन्देह पवित्र कुरआन के अद्भुत गुण सम्पूर्ण सृष्टि के सामूहिक चमत्कारों से अधिक बढ़कर हैं

बात प्रत्येक मनीषी को शीघ्र समझ में आ सकती है कि अल्लाह तआला की कोई भी रचना बारीकियों और अद्भुत विशेषताओं से खाली नहीं और यदि एक मक्खी के गुण एवं उसकी विलक्षणताओं की प्रलय तक छानबीन करते चले जाएं तो भी कभी समाप्त नहीं हो सकती। अत: अब सोचना चाहिए कि क्या पवित्र क़ुर्आन के गुण और विलक्षणताएं अपने महत्व और शैली में मक्खी जितने भी नहीं। नि:सन्देह वे अद्भुत गुण सम्पूर्ण सृष्टि के सामूहिक चमत्कारों से अधिक बढ़कर हैं और उनका इन्कार वास्तव में पवित्र क़ुर्आन के ख़ुदा की ओर से होने का इन्कार है क्योंकि संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जो ख़ुदा तआला की ओर से जारी हो और उसमें असीम चमत्कार न पाए जाएं। .........वे बारीकियां और रहस्य जो आध्यात्म ज्ञान को अधिक करते हैं वे सदैव आवश्यकतानुसार खुलते रहते हैं तथा नए-नए बिगाड़ और विकारों के समय नए-नए नीतिपूर्ण अर्थ प्रकट होते रहते हैं। यह तो स्पष्ट है कि पवित्र क़ुर्आन स्वयं एक चमत्कार है और उसमें चमत्कार का सबसे प्रमुख कारण यह है कि वह समस्त असीमित वास्तविकताओं का संग्रहीता है किन्तु वे कुसमय प्रकट नहीं होते। जैसे-जैसे समय की कठिनाइयां मांग करती हैं वे गुप्त आध्यात्मिक ज्ञान प्रकट होते जाते हैं। देखो सांसारिक विद्याएं जो प्राय: क़ुर्आन के विपरीत और असावधानी में डालने वाली हैं आजकल जितने  जोर के साथ उन्नति कर रही हैं और युग अपनी गणित विद्या, भौतिकी तथा दर्शनशास्त्र के अन्वेषणों में कैसी अद्भुत प्रकार के परिवर्तन दिखा रहा है। क्या ऐसे गंभीर समय में आवश्यक न था कि ईमानी और आध्यात्मिक ज्ञान संबंधी विकासों के लिए भी द्वार खोला जाता ताकि नवीन उपद्रवों की प्रतिरक्षा के लिए आसानी पैदा हो जाती। अत: निश्चित समझो कि वह द्वार खोला गया है और ख़ुदा तआला ने इरादा कर लिया है ताकि क़ुर्आन के गुप्त चमत्कार इस संसार के अभिमानी दार्शनिकों पर प्रकट करे। अब इस्लाम के शत्रु अर्धमुल्ला इस इरादे को रोक नहीं सकते। यदि अपनी उद्दण्डताओं से नहीं रुकेंगे तो तबाह किए जाएंगे और प्रकोपी ख़ुदा के प्रकोप का थप्पड़ ऐसा लगेगा कि मिट्टी में मिल जाएंगे। इन मूर्खों को वर्तमान दशा बिल्कुल दिखाई नहीं देती, चाहते हैं कि पवित्र क़ुर्आन पराजित, कमजोर, निर्बल और तिरस्कृत सा दिखाई दे परन्तु अब वह एक युद्ध करने वाले योद्धा के समान निकलेगा। हां वह एक शेर के समान रणभूमि में निकलेगा और संसार के समस्त दर्शनशास्त्र को खा जाएगा और अपनी विजय प्रदर्शित करेगा और لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ की भविष्यवाणी पूर्ण कर देगा तथा وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمْ की भविष्यवाणी को आध्यात्मिक तौर पर पराकाष्ठा तक पहुंचाएगा क्योंकि पृथ्वी पर धर्म का पूर्ण रूप से स्थापित हो जाना मात्र बलात् और ज़बरदस्ती से संभव नहीं। धर्म पृथ्वी पर उस समय स्थापित होता है जब उसके मुकाबले पर कोई धर्म खड़ा न रहे और समस्त विरोधी शस्त्र डाल दें। अत: अब वही समय आ गया। अब वह समय मूर्ख मौलवियों के रोकने से रुक नहीं सकता। अब वह इब्ने मरयम जिस का आध्यात्मिक पिता पृथ्वी पर वास्तविक शिक्षक के अतिरिक्त कोई नहीं जो इस कारण आदम से भी समरूपता रखता है। पवित्र क़ुर्आन का बहुत सा ख़ज़ाना लोगों में बांटेगा। यहां तक कि लोग स्वीकार करते-करते थक जाएंगे और لا يقبله احدٌ के चरितार्थ बन जाएंगे और प्रत्येक स्वभाव अपनी पात्रता के अनुसार भर जाएगा। (इज़ाला औहाम, रूहानी खज़ाइन, खंड 3, पृष्ठ 462-467)

★ ★ ★

## सम्पादकीय "दरसुल कुरआन" जमाअत-ए-अहमदिया की पहचान

अल्लाह ने विभिन्न स्थानों पर पवित्र कुरान की तिलावत की ओर इशारा किया है। एक जगह कम से कम टास्क देते हुए फरमाता है فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ (अज़्ज़ुमर : 21)
हज़रत अरबाज़ इब्न सारियाह रिवायत करते हैं कि पैगंबर सल्लाल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें सुबह की नमाज़ पढ़ाई और इस के बाद हमारी ओर देख कर एक प्रभावी और उत्कृष्ट सलाह दी। (इब्न माजाह)
पस बाद नमाज़ फ़ज्र विशेष रूप से या स्थिति अनुसार किसी निर्धारित समय पर क़ुरआन-ए-करीम का दरस का आयोजन करना बहुत अच्छा है। चूँकि क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षाएँ ख़ुद हासिल करके दूसरों को पहुंचाना एक मुस्लमान का फ़र्ज़ है। इसी लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:
'' तुम होशयार रहो और ख़ुदा की तालीम और क़ुरआन की हिदायत के बरख़िलाफ़ एक क़दम भी ना उठाओ। तुम क़ुरआन को तदब्बुर से पढ़ो और इस से बहुत ही प्यार करो। ऐसा प्यार कि तुमने किसी से ना क्या हो। क्योंकि जैसा कि ख़ुदा ने मुझे संबोधित कर के फ़रमाया اَلْخَيْرُ كُلُّهٗ فِى الْقُرْاٰنِ कि तमाम किस्म की भलाईआं क़ुरआन-ए-करीम में हैं। यही बात सच्च है। अफ़सोस उन पर जो किसी और चीज़ को इस पर प्राथमिकता देते हैं। तुम्हारी संपूर्ण उन्नति और मुक्ति का स्रोत क़ुरआन में ही है। कोई भी तुम्हारी ऐसी ज़रूरत नहीं जो क़ुरआन में नहीं पाई जाती। तुम्हारे ईमान का सत्यापन करने वाला या झुठलाने वाला क़ियामत के दिन क़ुरआन है।''(कश्ती-ए-नूह, रुहानी खज़ाइन जिल्द 19 सफ़ा 26)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम के वक़्त से ही जमाअत-ए-अहमदिया में क़ुरआन-ए-करीम के दरस का विशेष प्रबंध रहा है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल (प्रथम) के दरस का नक़्शा खींचते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए फ़रमाते हैं :
''यह दरस मस्जिद-ए-अक़्सा में हुआ करता था और आरंभ में कभी-कभी ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी इस दरस में चले जाया करते थे। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल के दरस में उच्च कोटि की ज्ञानवर्धक व्याख्या के इलावा नसीहत करने का पहलू भी स्पष्ट होता था...आपका दरस बे हद दिलचस्प और हर तबक़ा के लिए प्रभावी और आकर्षित हुआ करता था।''(तारीख़-ए-अहमदियत जिल्द तीन सफ़ा 559)
इस के बाद भी जमात में दरसुल क़ुरआन का सिलसिला बाक़ायदा जारी रहा। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :
''रमज़ान में जमात में क़ुरआन-ए-करीम के दरस का सिलसिला खासतौर पर जारी है... क़ुरआन-ए-करीम का आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना सिर्फ एक महीने पर ही आधारित नहीं बल्कि सारा साल रहना चाहिए। इस वजह से यहां रोज़ाना फ़ज्र की नमाज़ के बाद चंद मिनट के लिए क़ुरआन-ए-करीम का दरस होता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अंहों की तफ़सीर बयान की जाती है। इस इलाक़े में रहने वाले लोगों को इस को सुनना चाहिए। इसी तरह जिन-जिन दूसरी जगहों पर लोग रह रहे हैं जहां मसाजिद हैं, सैंटर हैं, नमाज़ बाजमाअत होती है वहां भी दरस का इंतिज़ाम होना चाहिए। इस हवाले से भी मैं तमाम दुनिया की जमातों को तवज्जा दिलानी चाहता हूँ कि मुबल्लिग़ीन और मुरब्बियान जो हैं वह अपनी मुक़ामी ज़बान में

जिस हद तक तफ़सीर कबीर का या दूसरी तफ़ासीर जो जमात में हैं बल्कि तफ़सीर कबीर ही पहली लेनी चाहिए उस का जिस हद तक बेहतर तर्जुमा कर सकते हैं करें और दरस दिया करें और जहां मुरब्बियान नहीं हैं वहां कोई भी उर्दू पढ़ने वाला लेकिन साहिब-ए-इल्म क़ुरआन-ए-करीम का इस ज़बान में तर्जुमा कर के दरस दे सकता है। या इंग्लिश में फाईव वॉल्यूम कमैंटरी (Five Volume Commentary) है इस में से दरस दे सकते हैं.... बहर-ए-हाल कहने का मतलब यह है कि दरस क़ुरआन-ए-करीम का सिलसिला हमेशा जारी रहना चाहिए। अत: इस वज़ाहत को तमाम दुनिया की जमातों को सामने रखना चाहिए।"(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल लंदन 27 अप्रैल 2018)

चार नुकाती प्रोग्राम में भी रोज़ाना बाद नमाज़ फ़ज्र दरसुलल क़ुरआन में शामिल हो कर सुनने की हिदायत है। दुआ है कि अल्लाह तआला हमे दरसुल क़ुरआन से यथासामर्थ्य लाभान्वित होने का सौभाग्य दे। आमीन

**(हाफ़िज़ सय्यद रसूल नियाज़)**

★ ★ ★

**INDIAN AUTO**

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

**P. Ali Koya**

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

**MUSTAFA BOOK CO**

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

**KANNUR-1 (KERALA)**

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

**तालिबे दुआ :**

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

निवेदन सदर-ए-मज्लिस

# "मियां मिट्ठू न बनो-हर उम्र में क़ुरआन-ए-करीम पढ़ो

अताउल मुजीब लोन, सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोइयों के मुताबिक़ इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रीया क़ुरआन-ए-करीम की महानता और सच्चाई को साबित करना मुक़द्दर है। चुनांचे आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"ख़ुदा ने मुझे भेजा है कि ता मैं इस बात का सबूत दूं कि ज़िंदा किताब क़ुरआन है और ज़िंदा दीन इस्लाम है और ज़िंदा रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा है।"(अलहकम 31 मई 1900 ई०) नीज़ फ़रमाया "मुझे भेजा गया है ताकि मैं सल्लाल्लाहो अलैहि वसल्लम की खोई हुई अज़मत को फिर क़ायम करूँ और क़ुरआन शरीफ़ की सच्चाइयों को दुनिया को दिखाऊँ और यह सब काम हो रहा है लेकिन जिनकी आँखों पर पट्टी है वह इस को देख नहीं (मल्फ़ूज़ात जिल्द 3 सफ़ा 9 ऐडीशन 1988ई०)

क़ुरआन-ए-करीम की तालीम को दुनिया में फैलाने के लिए ही जमाअत अहमदिया भारत की तरफ़ से हर साल माह-ए-जुलाई में हफ़्ता क़ुरआन-ए-मजीद मनाया जाता है। जिसमें अराकीन अंसारुल्लाह भी शामिल होते हैं। दरअसल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अंहों ने अंसारुल्लाह की तंज़ीम क़ायम फ़रमाते हुए इस तंज़ीम के छ: मक़ासिद बयान फ़रमाए थे। जिनमें से एक क़ुरआन-ए-करीम की तालीम भी है। इस लिए क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा, तर्जुमा सीखने और दूसरों को सिखाने के लिए अंसारुल्लाह की तंज़ीम को ख़ुसूसीयत से कोशिश करनी चाहिए। हरामर् के लोगों को क़ुरआन-ए-करीम सीखने की तलक़ीन करते हुए आप हैं।

"हमारी जमात के लोगों को चाहिए कि ख़ाह कोई अस्सी बरस का बूढ़ा ही क्यों न हो फिर भी क़ुरआन-ए-करीम के पढ़ने और अनुवाद सीखने की कोशिश करे। कौन कहता है कि बड़ी उम्र में पढ़ा नहीं जाता। जिस तरह वह दुनिया के कामों में मेहनत करते और मुश्किलात उठाते हैं और वक़्त सर्फ़ करते हैं अगर उस का आधा हिस्सा भी क़ुरआन शरीफ़ के सीखने में लगाऐं तो सीख सकते हैं। यह हर एक अहमदी का फ़र्ज़ है कि कम अज़ कम क़ुरआन शरीफ़ का तर्जुमा तो पढ़ ले और इन्सान और बाख़ुदा इन्सान बने न कि मियां मिट्ठू बने। क़ुरआन शरीफ़ के मअनी न समझना और यूंही पढ़ना मियां मिट्ठू बनना है। अत: तुम तर्जुमा सीखो और अनुवाद

और मतलब समझो ताकि तुम्हें मालूम हो कि अल्लाह तआला क्या हुक्म देता है। तुम क़ुरआन को अर्थ के साथ पढ़ने की कोशिश करो.... तुम मुस्लमान बनो और मुस्लमान हो कर क़ुरआन के अर्थ सीखो। जब सीख जाओगे तो उस के मुताबिक़ अमल करने की कोशिश करोगे और जब अमल करोगे तो ख़ुदा तआला के मुक़र्रब बन जाओगे। अपना वक़्त निकाल कर बूढ़े जवान औरतें बच्चे क़ुरआन सीखें और जहां मौक़ा पाएँ कोताही न करें .... हमारे लिए दिक्कतें भी हैं कि अहमदी बड़ी उम्र के लोग होते हैं जिनकी तर्बीयत और पढ़ने का ज़माना गुज़र चुका होता है मगर सहाबा में ऐसे आदमी पाए जाते हैं जिन्हों ने बड़ी उम्र में ही दूसरे मज़ाहिब की किताबों को पढ़ कर फ़ायदा उठाया। (ख़ुतबा जुमा 2 अक्तूबर 1914 ख़ुतबात महमूद जिल्द 4 सफ़ा 187)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"हर अहमदी की ज़िम्मेदारी है कि वह क़ुरआनी तालीम पर न सिर्फ अमल करने वाला हो, अपने ऊपर लागू करने वाला हो बल्कि आगे भी फैलाए और हज़रत मसीह मौऊद के मिशन को आगे बढ़ाए.. हमेशा हज़रत मसीह मौऊद का यह फ़िक़रा हमारे ज़हनों में होना चाहिए कि जो लोग क़ुरआन को इज़्ज़त देंगे वह आसमान पर इज़्ज़त पाएँगे। हम हमेशा क़ुरआन के हर हुक्म और हर लफ़्ज़ को इज़्ज़त देने वाले हों और इज़्ज़त उस वक़्त होगी जब हम इस पर अमल कर रहे होंगे और जब हम इस पर अमल कर रहे होंगे तो क़ुरआन-ए-करीम हमें हर परेशानी से नजात देने वाला और हमारे लिए रहमत की छतरी होगा।"(ख़ुतबा जुमा 21 अक्तूबर 2005)

दुआ है कि अल्लाह तआला हम अंसारुल्लाह को रोज़ाना तिलावत क़ुरआन-ए-करीम के साथ तर्जुमा सीखने और तफ़सीर भी पढ़ने की तौफ़ीक़ फ़रमाए। आमीन

**(अताउल मुजीब लोन)**
**सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत**

★ ★ ★

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE
Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546
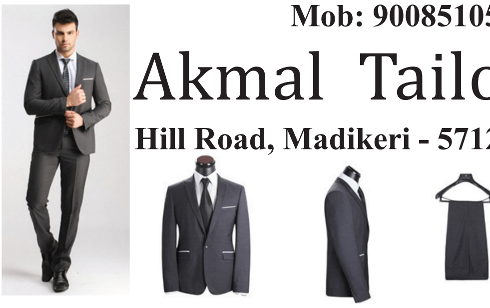
Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201
Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

## अहमदिया मुस्लिम रिसर्च एसोसिएशन (AMRA) के पहले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर हज़रत अमीरुल मोमिनीन खलीफ़तुल मसीह अलखामीस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के अंग्रेज़ी भाषण का हिन्दी अनुवाद।

**(14 दिसंबर 2019ई० मसरूर हॉल, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड, यूके)**

**(अनुवादक : इब्नुल मेहदी लईक, मुरब्बी-ए-सिलसिला, एम.ए. हिन्दी)**

**(शेष भाग पत्रिका जून 2024 ई०)**

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने प्रोफेसर क्लेमेंट रिग के साथ बातचीत में जोर देकर कहा कि विज्ञान और धर्म के बीच कोई संघर्ष नहीं है और विज्ञान ने कभी भी पवित्र कुरान या इस्लामी शिक्षाओं के एक भी अक्षर या शब्द का खंडन नहीं किया है। विज्ञान कितना भी विकसित हो जाये यह कभी संभव नहीं होगा। इसके विपरीत, प्रत्येक खोज और प्रत्येक विकास पवित्र कुरान की शिक्षाओं को सत्य और केवल ख़ुदा के अस्तित्व को ही सिद्ध करेगा। पवित्र कुरान हमें विज्ञान से दूर रहने या उसका अध्ययन करने से नहीं रोकता, बिल्कुल नहीं, पवित्र कुरान मोमिनों को अपनी बुद्धि और ख़ुदा प्रदत्त प्रतिभाओं और क्षमताओं का पता लगाने, जांच करने और उपयोग करने का आदेश देता है। जो लोग मानव जाति के लाभ के लिए मानव ज्ञान को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं, उन्हें निश्चित रूप से अल्लाह सर्वशक्तिमान द्वारा उनके प्रयासों के लिए पुरस्कृत किया जाएगा। लेकिन पवित्र कुरान ने चेतावनी दी है कि मनुष्य को प्रकृति के कानून में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए और अप्राकृतिक तरीकों से अल्लाह की रचना को बदलने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, हाल के वर्षों में आनुवंशिक इंजीनियरिंग और जीवित प्राणियों की क्लोनिंग द्वारा वैज्ञानिक मूल्यों की सीमाओं का धीरे-धीरे उल्लंघन किया गया है। ये अनैतिक और खतरनाक प्रयास हैं। इन कर्मों के परिणाम जबकि मनुष्य अपनी सीमाओं से परे जाकर ख़ुदा बनने की कोशिश कर रहा है, निस्संदेह, वे बहुत भयानक होंगे और मानवजाति को विनाश की ओर ले जायेंगे। उनका अंत न केवल अपने समर्थकों को आखिरत की जहन्नम में धकेलना होगा, बल्कि वे इस दुनिया में भी नरक बनाने के लिए जिम्मेदार होंगे। यह एक ऐसी चीज़ है जिससे हर अहमदी शोधकर्ता और वैज्ञानिक को बचना चाहिए। आपको केवल वही रास्ते अपनाने चाहिए जो मानव जाति के लाभ के लिए हैं और जो अल्लाह तआला की सीमाओं के अनुरूप हैं। हमेशा याद रखें कि पवित्र कुरान द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर रहना एक मोमिन की निशानी है। यदि आप इस प्रकार अपना कार्य करेंगे तो आप महान उपलब्धियाँ प्राप्त करेंगे। और वे मुस्लिम विद्वानों और शिक्षाविदों की उत्कृष्ट प्रतिष्ठा को बहाल करने में सक्षम होंगे।

सर्वशक्तिमान अल्लाह की कृपा से, मध्य युग के दौरान, कई मुस्लिम वैज्ञानिकों, दार्शनिकों और बुद्धिजीवियों ने मानव ज्ञान और समझ को बढ़ावा देने में मानवता पर एक अमिट छाप छोड़ी। उनके शुरुआती प्रयासों ने दुनिया में एक महत्वपूर्ण क्रांति पैदा की और उनके शोध और खोजें अभी भी मौजूद हैं जो आधुनिक विज्ञान और गणित की नींव हैं। उन्होंने अपनी ख़ुदा प्रदत्त बुद्धि और क्षमताओं का उपयोग किया, सर्वशक्तिमान अल्लाह की मदद ली और उसकी रचना पर विचार किया, जिसके परिणामस्वरूप इतिहास ने उन्हें पहचाना और आज भी उन्हें सम्मानित किया जाता है।

उदाहरण के लिए, 2016 में नेशनल ज्योग्राफिक द्वारा "हाउ इस्लामिक साइंस एडवांस्ड मेडिसिन" शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया गया था, जिसमें इस्लाम के शुरुआती दिनों में मुस्लिम वैज्ञानिकों के योगदान के बारे में बताया गया था

इस में लिखा है:"इस्लामिक देशों में चिकित्सकों को मध्य युग के अंत में बहुत सम्मान दिया जाता था। उस समय, चिकित्सा के अध्ययन और अभ्यास को उनके विशाल क्षेत्र में मुस्लिम समाज द्वारा उन्नत किया गया था, जो आधुनिक दक्षिणी स्पेन से ईरान तक फैला हुआ था।"

आगे लिखा है कि

९00 के दशक तक, ग्रीक, फ़ारसी और संस्कृत चिकित्सा ग्रंथों के अरबी में अनुवाद की संख्या बढ़ गई और इस्लामी चिकित्सा ने जल्द ही विश्व स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त कर ली। ईसाई, यहूदी, हिंदू और कई अन्य संप्रदायों के विद्वानों ने अरबी को विज्ञान की भाषा के रूप में देखा। विभिन्न धर्मों के डॉक्टरों ने एक साथ काम किया और अरबी में चर्चाएँ और अध्ययन संयुक्त रूप से आयोजित किए गए।

इसी आर्टिकल में आगे लिखा है कि

"बगदाद के क्षितिज पर सबसे चमकीला सितारा निस्संदेह इब्ने सीना था, जो असाधारण गुणों वाला व्यक्ति था... 18 साल

की उम्र में ही आप की कई जिल्दों पर आधारित पुस्तक अलक़ानून फिત्तिब अर्थात तिब का कानून रहती दुनिया तक प्रसिद्ध तिब्बी कामों में से एक है। यूनानी विचारक जलीनूस (Galen) की चिकित्सा पद्धतियों को अरस्तू के दर्शन के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास इब्न सीना का है। इस से इस क्षेत्र के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है जो मुसलमानों के विचार और अध्ययन में डाला गया था जिसने न केवल यूनानी संपादकों के कार्यों को पुनर्जीवित किया बल्कि आने वाली शताब्दियों के लिए विचार के नए पैटर्न को भी उजागर किया। "अल-कुनुन" का अध्ययन 18वीं सदी तक यूरोपीय चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा किया जाता था, निस्संदेह ऐसा ही होना था इसका मतलब यह था कि व्यावहारिक विज्ञान, विचार और धर्म में सामंजस्य था।

नेशनल जियोग्राफिक के इस लेख में आगे कहा गया है कि स्पेन में मुस्लिम शासन का काल "बौद्धिक प्रगति का युग" था और 10वीं शताब्दी में कुर्तबा को "यूरोप का सबसे सुसंस्कृत शहर" और "अध्ययन और चिंतन का एक महान केन्द्र वर्णन किया गया है।

द न्यूयॉर्क टाइम्स द्वारा प्रकाशित एक अन्य लेख, हाउ इस्लाम वोन एंड लॉस्ट, द लीड इन साइंस, प्रारंभिक मुस्लिम वैज्ञानिकों के योगदान की खुले तौर पर प्रशंसा करता है।

संपादक लिखते हैं:

"सभ्यताएं सिर्फ टकराती नहीं हैं, वे एक-दूसरे से सीखती हैं।" इस्लाम इसका एक अच्छा उदाहरण है। अरबों और यूनानियों की बौद्धिक बैठक न केवल इस्लाम के लिए, बल्कि यूरोप और पूरे विश्व के लिए इतिहास की महान घटनाओं में से एक है, इसका पैमाना और परिणाम बहुत व्यापक हैं।

लेकिन यह लेख यह भी बताता है कि शुरुआती मुसलमानों के कई योगदानों पर ध्यान नहीं दिया गया है। इस हवाले से लिखा है:

"...इतिहासकारों का कहना है कि वे इस स्वर्ण युग के बारे में बहुत कम जानते हैं। इस युग के कुछ सबसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक कार्यों का अरबी से अनुवाद किया गया था और कई हज़ार पांडुलिपियों को आधुनिक विद्वानों ने कभी नहीं पढ़ा है।"

अत: मुस्लिम विद्वानों के ऐतिहासिक योगदान में कोई संदेह नहीं है।

यह बहुत दुख की बात है कि अधिकांश मुस्लिम जगत की वर्तमान बौद्धिक स्थिति दुखद है।

समय बीतने के साथ, जब मुसलमान अल्लाह तआला से दूर हो गए और उनमें मोमिन से जुड़े गुण तेजी से गायब हो गए, तो जो मुसलमान पहले विज्ञान और अनुसंधान में दुनिया का नेतृत्व करते थे, वे धीरे-धीरे अज्ञानी युग में दाखिल हो गए जो अभी तक जारी है। आविष्कारों और खोजों में अग्रणी होने के बजाय, मुस्लिम ज्ञान का उत्कर्ष समाप्त हो गया और मुसलमान अन्य लोगों की खोजों और आधुनिक तकनीक पर निर्भर हो गए। दुनिया को कुछ देने के बजाय, मुसलमान दुनिया से केवल लेने वाले बन गए हैं, इसलिए जहां दुनिया विज्ञान और ज्ञान प्राप्ति में मुसलमानों के ऐतिहासिक योगदान को मान्यता देती है, वहीं वह दुनिया में आधुनिक मुसलमानों की बौद्धिक स्थिति को खेद की दृष्टि से देखती है।

यदि सामान्य रूप से देखा जाए तो तथ्य यह है कि मुस्लिम दुनिया ने ज्ञान प्राप्त करने और मानवीय प्रयास से ज्ञान को आगे बढ़ाने का अपना जुनून खो दिया है।

मुस्लिम राष्ट्र दुनिया की सुख-सुविधाओं में डूब गए हैं, इसलिए उनमें अब ज्ञान प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करने या ब्रह्मांड का चिंतन करने का उत्साह नहीं रह गया है।

आधुनिक विज्ञान एवं ज्ञान अर्जन में हिलेल ओफ़ेक ने अपने लेख "अरब दुनिया विज्ञान से विमुख क्यों हुई" में मुसलमानों की विफलता के बारे में बात की है। वह संयुक्त राज्य अमेरिका में क्लेमेंट सेंटर फॉर नेशनल सिक्योरिटी में रिसर्च फेलो हैं। वह मुसलमानों की स्थिति का एक नक्शा खींचते हैं कि मुसलमान, जो विज्ञान और मानव सभ्यता के विकास में अग्रणी थे, ऐसी स्थिति में चले गए हैं कि अब अकादमिक समुदाय में उनके योगदान को हेय दृष्टि से देखा जाता है। वह लिखते हैं कि लगभग 1600 तक मुस्लिम वैज्ञानिकों और विद्वानों की बौद्धिक प्रगति की तुलना में यूरोप कुछ भी नहीं था। वह यह भी बताते हैं कि बीजगणित, अल-ख्वारिज्म, अल-कामी और अल-काली जैसे कितने वैज्ञानिक और गणितीय शब्द अरबी भाषा से आए हैं और ये शब्द दुनिया में इस्लाम के योगदान को दर्शाते हैं।

फिर वह आगे बढ़ते हैं और एक अधिक आधुनिक युग की तस्वीर पेश करते हैं कि मुस्लिम देशों में विज्ञान की वर्तमान स्थिति अतीत में मुसलमानों की गौरवशाली स्थिति के बिल्कुल विपरीत है।

उदाहरण के लिए वह बताते हैं कि इस तथ्य के बावजूद कि दुनिया में 1.6 अरब मुसलमान हैं, मुस्लिम देशों के केवल 2 मुसलमानों ने नोबेल पुरस्कार जीता है। एक और आकलन वह स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हैं कि यदि 46 मुस्लिम देशों को मिला दिया जाए, तो मुस्लिम देशों ने पूरी दुनिया में वैज्ञानिक साहित्य में केवल एक प्रतिशत का योगदान दिया है। इसी प्रकार वे लिखते हैं कि 1989 में संयुक्त राज्य अमेरिका ने दस हज़ार से अधिक वैज्ञानिक लेख (वैज्ञानिक पत्र) प्रकाशित

किये, जिनमें से अनेक सन्दर्भ प्रस्तुत किये गये। जबकि पूरे अरब जगत में इसी अवधि में केवल 4 लेख प्रकाशित हुए, जिनमें से आमतौर पर संदर्भ प्रस्तुत किए गए थे। लेखक ने यह भी लिखा है कि 1980 से 2000 के बीच, केवल एक देश, दक्षिण कोरिया ने 16,000 से अधिक बौद्धिक पेटेंट दिए, जबकि अरब ने मिला कर कुल 370 पेटेंट दिए। इन देशों में मिस्र, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात शामिल हैं।

लेख में नोबेल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर स्टीवन वेनबर्ग का भी उद्धरण दिया गया है जिसमें उन्होंने मुस्लिम देशों में उत्पादित वैज्ञानिक सामग्रियों की कमी पर चर्चा की है।

प्रोफेसर वेनबर्ग लिखते हैं:

हालाँकि मुस्लिम देशों के प्रतिभाशाली वैज्ञानिक पश्चिमी देशों में उत्पादक रूप से काम कर रहे हैं, लेकिन चालीस वर्षों में मैंने किसी भौतिक विज्ञानी या खगोलशास्त्री का एक भी लेख मुस्लिम देश में काम करते नहीं देखा है।

ज्ञान और विज्ञान की दृष्टि से मुसलमानों और इस्लामी देशों को विश्व का नेतृत्व करना था, लेकिन अब उनका उपहास और अपमान किया जाता है।

इस्लामी दुनिया में शैक्षणिक अज्ञानता के इस दौर में, अहमदी मुस्लिम वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए दुनिया भर के शैक्षणिक क्षेत्रों में इस्लाम के खोए हुए सम्मान और प्रतिष्ठा को बहाल करना एक बड़ी चुनौती है।

तो यह आपका संकल्प होना चाहिए कि आप इस शानदार विद्वत्तापूर्ण शैली की बागडोर संभालें जिसे मध्य युग के महान मुस्लिम विद्वानों और अन्वेषकों द्वारा सुशोभित किया गया था।

यह हमारी परंपरा है कि हर साल जमात अहमदिया ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को स्वर्ण पदक वितरित करती है। लेकिन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय (हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब) ने इस तहरीक की शुरुआत में निर्देश दिया था कि स्वर्ण पदक और छात्रवृत्तियाँ विशेष रूप से उन लोगों को दी जानी चाहिए जो विज्ञान में उत्कृष्ट हैं।

जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय द्वारा इस तहरीक को शुरू करने के कुछ समय बाद डॉ. अब्दुस सलाम साहब ने नोबेल पुरस्कार जीता और उनकी दिली इच्छा थी कि कम से कम 100 अहमदी मुसलमान डॉ. अब्दुल सलाम के नक्शेकदम पर चलें और जब जमात अपने दूसरे चरण में प्रवेश करे तो तो यह अहमदी मुसलमान प्रमुख वैज्ञानिक बन जाएँ। अहमदिया जमात की दूसरी सदी के तीन दशक अब बीत चुके हैं। दुख की बात है कि मुझे कहना पड़ रहा है और मुझे लगता है कि हमने इस अवधि में विश्व प्रसिद्धि हासिल करने वाला कोई वैज्ञानिक नहीं बनाया है। साथ ही मैंने पिछले 13 या 14 वर्षों में अहमदी छात्रों को सीधे या मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया के माध्यम से निर्देश दिए हैं कि शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में जाएँ और अपने क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने का प्रयास करें। लेकिन अभी तक यह नहीं कहा जा सकता कि नतीजे मेरी आशा के करीब भी आये हैं, जहाँ तक मुझे पता है, शायद ही किसी अहमदी ने दुनिया के वैज्ञानिक या बौद्धिक विकास में कोई महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हो।

यहां मैं संयुक्त राज्य अमेरिका में अहमदी वैज्ञानिकों के संघ के प्रयासों की सराहना करना चाहता हूं जो काफी सक्रिय हैं और विज्ञान और कुरान पर नियमित बैठकें करते हैं। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होने वह असाधारण काम किया है जिसकी उनसे आशा है।

यहां एकत्र होने और सम्मेलन के आयोजन के परिणामस्वरूप, आप सभी को अपने चुने हुए क्षेत्र में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का अपना मिशन बनाना चाहिए। आपको उनके नक्शेकदम पर चलने के दृढ़ संकल्प के साथ यहां से जाना चाहिए। आपको इस बात पर विचार करना चाहिए कि आप कैसे विकास कर सकते हैं दुनिया की बेहतर समझ-बूझ कैसे पैदा करें जिससे मानवता लाभान्वित हो सके। वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के रूप में यह आपकी ज़िम्मेदारी है कि आप अपने दिमाग और प्रतिभा का उपयोग करें और ऐसे तरीके और साधन खोजें जिनके द्वारा आप महान वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हासिल कर सकें एक-दूसरे से संपर्क करें, विशेषकर उन लोगों से जो आपके जैसे ही शोध के क्षेत्र में हैं और एक-दूसरे से सीखें। आपसी बातचीत और समन्वय से आप बेहतर परिणाम हासिल करने में सफल रहेंगे जोश और जुनून के साथ काम करें और सबसे बढ़कर अपने शैक्षणिक काल के हर कदम पर अल्लाह सर्वशक्तिमान की मदद लें और उसकी शान को अपने सामने रखें।

इन अनुरोधों के बाद, मैं प्रार्थना करता हूं कि अल्लाह तआला आप सभी को अपने-अपने क्षेत्रों में प्रगति करने और बड़ी सफलता हासिल करने की क्षमता प्रदान करे। आशा है कि हम जल्द ही दुनिया भर में अहमदी मुसलमानों के नेतृत्व में इस्लामी बौद्धिक श्रेष्ठता और विकास के एक नए स्वर्ण युग की शुरुआत देखेंगे। आमीन

(त्रैमासिक इस्माइल पत्रिका अप्रैल-जून 2021 पृष्ठ 16-10)

★ ★ ★

9.6.2024 को श्री हारून रशीद साहिब नाज़िम अंसारुल्लाह की अध्यक्षता में आयोजित तरबियती कैंप ज़िला बालासोर, भद्रक (ओडिशा) के अवसर पर भाषण देते हुए श्री सय्यद फ़हीम अहमद साहिब नाइब क़ाइद तरबियत नौ मुबाईन भारत।

9.6.2024 को आयोजित तरबियती कैंप ज़िला 24 परगना (बंगाल) के अवसर पर भाषण देते हुए श्री मातीनुर्रहमान साहिब नाइब क़ाइद माल भारत।

9.6.2024 को मज्लिस अंसारुल्लाह हैदराबाद की तरफ़ से आयोजित पिकनिक,वर्ज़िशि मुक़ाबलाजात और मुशाइरा कि अध्यक्षता करते हुए श्री तनवीर अहमद साहिब नाइब सदर अंसारुल्लाह जुनूबी हिन्द।

9.6.2024 को मज्लिस अंसारुल्लाह हैदराबाद की तरफ़ से आयोजित पिकनिक, वर्ज़िशि मुक़ाबलाजात और मुशाइरा में भाग लेने वाले अंसार अराकीन का एक दृश्य।

19.5.2024 को मज्लिस अंसारुल्लाह कोज़ीकोड, वायनाड (केरला) की तरफ़ से आयोजित रक्त दान, मेडिकल कैंप के कुछ दृश्य।

19.5.2024 को मज्लिस अंसारुल्लाह कोज़ीकोड, वायनाड (केरला) की तरफ़ से आयोजित वक़ारे अमल (बीच क्लीन डे) के इख़्तिमाम पर एक ग्रुप फ़ोटो।